DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

रस

LIVE 30-04-2024 09:00 AM

भक्ति → अनुराग (प्रेम)

रस		स्थायी भाव
श्रृंगार	→	रति (प्रेम)
हास्य	→	हास (हँसना)
करुण	→	शोक (दुःख)
वीर	→	उत्साह (जोश)
रौद्र	→	क्रोध (गुस्सा)
भयानक	→	भय (डर)
वीभत्स	→	जुगुप्सा (घृणा)
अद्भुत	→	विस्मय (आश्चर्य)

विभाव { भाव को उत्पन्न करने वाला }
- → आलंबन [जिसके कारण या द्वारा भाव जगे]
  - आश्रयालंबन, विषयालंबन
- → उद्दीपन [जो भावों को गति प्रदान करें]

अनुभाव
- → वाचिक
- → आहार्य
- → कायिक
- → सात्विक (8)

संचारी भाव (33)

परिभाषा ⇒ रस का शाब्दिक अर्थ आनन्द होता है।

"काव्य को पढ़ने या सुनने या देखने से हमें जिस आनन्द की अनुभूति होती है। उसे रस कहा जाता है।"

* रसों को काव्य की आत्मा माना जाता है।
* आचार्य विश्वनाथ के अनुसार - "वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्"
  - अर्थ - रसयुक्त वाक्य ही काव्य कहलाता है।
* स्थायी भावों की संख्या (9) होती है।

नोट- हिन्दी में रसों की संख्या 9 होती है। यदि विकल्प में 9 व 11 दोनों हो तब 9 का ही चयन करें।

* संस्कृत में रस - 11
* प्राकृत में रस - 10
* हिन्दी में रस - 09
* रस के चार अंग होते हैं।
रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार → स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव

* भरत मुनि के द्वारा रस के तीन अंग है।
सूत्र :- विभावानुभाव व्यभिचारी भाव संयोगात् रस निष्पत्ति।
विभाव + अनुभाव + संचारी भाव

* अनुभावों की संख्या चार होती है।
  - ↳ कायिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक
    - (8)
    - ↳ स्तंभ, रोमांच, स्वर-भंग, स्वेद, कम्प, वैवर्ण्य, प्रलय, अश्रु

* रस सिद्धान्त का आदि प्रवर्तक भरतमुनि है।
  - ↳ भरतमुनि के अनुसार आठ रसों का उल्लेख है।

ग्रन्थ - नाट्यशास्त्र

अध्याय - 36

उपाधि - पंचमवेद

* 9वां रस - शान्त रस

प्रतिस्थापना - उद्भट

खोज - अभिनव गुप्त

स्थायी भाव - केशवदास

* वात्सल्य रस ↴

प्रतिस्थापना - विश्वनाथ

खोज - सूरदास

सिद्ध - हरिऔध

* भक्ति रस की प्रतिस्थापना रूप गोस्वामी ने की थी।

* शृंगार रस को रसराज कहा जाता है।
  └ रसराज की संज्ञा – भोजराज
* आचार्य भरत ने सर्वाधिक सुखात्मक रस हास्य रस को माना है।
* 'हर्ष' नामक 34 वां संचारी भाव देवकवि ने माना है।
* रस का सम्बन्ध 'सृ' धातु से माना जाता है।
* माधुर्य गुण शृंगार रस में प्रयोग होता है।
* भारतीवृत्ति का सम्बन्ध अद्भुत रस से होता है।
* अमर्ष एक संचारी भाव है।
* वियोग (विप्रलम्भ) शृंगार में वियोग की 10 दशाएँ मानी जाती है।

* संचारीभाव ⇒ जो भाव मन में केवल अल्पकाल तक संचरण करके चले जाते हैं। उन्हें संचारीभाव या व्यभिचारी भाव कहते हैं।